Global Journal of Multidisciplinary Studies

Volume 8, Issue 4, March 2019

ISSN:- 2348-0459

Available online at www.gjms.edwin.co.in

नए भारत के निर्माण में मेक इन इण्डिया का योगदान

डॉ.पंकज मिश्र
(विभागाध्यक्ष वाणिज्य संकाय)
संत तुलसीदास पी0जी0 कालेज,
कादीपुर–सुलतानपुर, उ0प्र0।

प्रस्तावना: - आजादी के बाद से भारत ने विभिन्न क्षेत्रो में उच्चस्तरीय तरक्की करके एक नये आयाम पर पहुंचने के लिए सफलतापूर्वक प्रयासरत रहा है। भारत वर्ष अपनी क्षमता का प्रदर्शन करते हुए विकास की नई दिशा तलाश कर रहा है और सफलतम इतिहास की रचना करने में कामयाब हो रहा है। किसी भी देश के विकास के पहलू को देखा जाय तो उसके कई आयाम होते है जिसके माध्यम से वह अपना कार्य सम्पन्न करता है। देशो को समयानुसार अपनी कार्यप्रणाली में परिवर्तन करके नयी-नयी विधियों को अपनाना पड़ता है सुधारात्मक कार्यवाही करनी पड़ती है और साथ ही साथ देश की राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आगे बढ़कर सभी को नये-नये नियमों एवं कानूनों में योगदान करके नवीनतम बातो को अपना कर देश को नयी दिशा-दशा एवं गति देना एक आवश्यक कदम होता है। भारत वर्ष में लगभग 60 वर्षो तक कांग्रेस के शासनकाल में बनी विभिन्न योजनाओं ने अपना कार्य किया परन्तु समय के साथ देश को भ्रष्टाचारए मंहगाई विदेशी उत्पादन पर निर्भरता जैसी विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए देश की जनता ने सन् 2014 में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व कर रहे नरेन्द्र दामोदरदास मोदी को अपना प्रधानमंत्री चुना यही से शुरू होता है भारत के निर्माण का कुछ परिकल्प जिसका शुभारम्भ प्ररधानमंत्री मोदी ने 25 सितम्बर 2014 को मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम की स्थापना करके किया।

मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम-

25 सितम्बर 2014 को इस योजना का शुभारम्भ किया गया जिसका लक्ष्य रखा गया कि देश का विनिर्माण क्षेत्र सफल हो क्योंकि जब तक निर्माण कार्य देश में नहीं होगाए देश का कुशल एवं चैमुखी विकास करना सम्भव नहीं होगा और देश की मुद्रा विदेशों मे जाती ही रहेगी और देश का विदेशी उत्पादनए मूल्य एवं उन पर आश्रितता बनी रहेगी। देश में रोजगार निम्न अवस्था में रहेगा और देश हमेशा मजबूरी की दशा में ही रहेगा इन्ही सब विषयों को ध्यान में रखकर इस योजना की आधार शिला प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रखी। मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम देश की उद्यमशीलता को बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त करेगा जिससे भारतीय पूंॅजीपतियों और युवाओं में उद्यमिता की भावना का विकास होगा जिससे देश में कुशल रोजगार की दशाएं नागरिकों के समक्ष उत्पन्न होगी।

मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम का मुख्य आधार विनिर्माण क्षेत्र होने के कारण इसका उद्देश्य देश में उद्यमशीलता को बढ़ाते हुए निवेश के लिए ऐसा अनुकूल माहौल तैयार करना है कि आधुनिक एवं कुशल संरचना बुनियादी सुविधा एवं प्रत्यक्ष विदेशी निवेश देश में आसानी से उपलब्ध हो सके जिससे नये सशक्त भारत का निर्माण सम्भव हो सकेए सरकार का यह प्रयास रहा है कि विनिर्माण क्षेत्र (उद्योग) एवं सरकारो के बीच एक सेतु का निर्माण हो सके जिससे सरकार उत्पादन का माहौल

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 4, March 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

देश में उपलब्ध कराए एवं देश का उद्यमी उसका सकारात्मक लाभ उठाकर देश के नागरिको को रोजगार का नया आयाम दे सके। भारत द्वारा मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु जापानए फ्रांसए चीन और दक्षिण कोरिया जैसे देशो ने निवेश हेतु अपना उत्साहबर्धक सर्मथन दिखाया है। ये सभी बड़े उत्पादक देश है जो भारत में आकर निर्माण कार्य सम्पन्न कर अपनी टेक्नोलाॅजी को भारत में साझा करने का मन बनाया है।

मेक-इन-इण्डिया का लक्ष्य:-

भारत सरकार द्वारा इसकी स्थापना के समय कुछ प्रमुख लक्ष्यों को केन्द्रित किया है जो इस प्रकार है।

1ण् इस योजना के तहत अभियान चलाकर सरकार ने प्राथमिकता वाले 25 क्षेत्रो का अवलोकन किया जिनको प्रोत्साहन देने की योजना बनी।

2ण् विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर को 12ः से 14ः तक प्रतिवर्ष के स्तर पर ले जाना।

3ण् देश के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी मंे वर्ष 2022 तक 16ः से 25ः तक की वृद्धि करना है।

4ण् केवल विनिर्माण क्षेत्र में 100 मिलियन का रोजगार वर्ष 2022 तक उत्पन्न करना।

5ण् भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को विश्वप्रतिस्पर्धी बनाना।

6ण् सम्पूर्ण विकास कार्यक्रम लक्ष्य की प्रप्ति हेतु ग्रामीण प्रवासी एवं शहरी गरीबो के बीच उचित कौशल का निर्माण एवं विकास करना।

7ण् मूल्य सम्बर्द्धन प्रणाली और निर्माण की तकनीकि कमियों को हमेशा के लिए दूर करना।

8ण् भारतीय उद्यमिता विकास कार्यक्रम को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना एवं ख्याति मे वृद्धि करना।

9ण् भारतीय क्षेत्रीयता की पहचान विश्व को विनिर्माण के हब के रूप में कराना।

10ण् स्थानीय क्षेत्र में उत्पादन क्रिया कलापो की स्थापना करके कुशल रोजगार प्रदान करना एवं स्थानीय उत्पादों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना।

11ण् विदेशी तकनीकी प्रणाली को भारत मंे लाना एवं भारतीय उत्पाद को विश्व प्रतिस्पर्धी बनाकर उनका निर्यात सम्वर्धन करना।

नये भारत के निर्माण में मेक-इन-इण्डिया की चुनौतियाँ:-

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 4, March 2019
ISSN:- 2348-0459 Available online at www.gjms.edwin.co.in

भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी द्वारा लाया गया यह अभियान अपने आप में एक क्रान्तिकारी विचार है परन्तु इसे पूर्णता से कर पाना इतना आसान कार्य नहीं है भारतीय विभिन्न विविधताओ को देखते हुए इसके पूर्ण होने की सम्भावना को निम्न विशिष्ट चुनौतियों को पूर्ण करना होगा।

1प निर्यात बढ़ाने की चुनौती - भारत के इस प्रोग्राम के सामने सबसे बड़ी चुनौती भारत में निर्मित (मेक-इन-इण्डिया) का माल विश्व के अन्य देशो के माँग के अनुरूप बनाना है जिससे वे अपना स्थान विदेशों मे बनाकर मांग को बनाए रखे। यह एक प्रमुख चुनौती देश के समक्ष होगी। क्योंकि बिना निर्यात के विदेशी मुद्रा की प्राप्ति नहीं हो सकती और योजना का सफल संचालन नहीं हो सकता है।

2प प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त करने की समस्या:-

भारत की इस महत्वाकांक्षी योजना में एक समस्या यह रही कि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की प्राप्ति जबकि सरकार द्वारा इसके लिए अच्छे प्रयास किये जा रहे है जिसके लिए रक्षाक्षेत्र नीति को उदार करते हुए थ्ण्क्ण्प्ण् को 26◌ः से बढ़ाकर 49◌ः तक लाया गया साथ-साथ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के लिए रक्षा क्षेत्र थ्ण्क्ण्प् को 100◌ः तक मंजूर कर दी गयी साथ-साथ वीक एवं चिकित्सा सम्बन्धी मामलो में व्यवस्था को उदारतम् स्तर पर लाया गया इसके लिए निवेश एक चुनौती का कार्य है कि योजना के अनुरूप लक्ष्य की प्राप्ति हो।

3प निवेशको सम्बन्धी समस्याएँ◌ः-

मेक-इन-इण्डिया कार्यक्रम में निवेशक निवेश से पहले अपने लिए अनुकूल विभिन्न मापदण्डो की जांच-परख करके अपने अनुकूल परिस्थिति पाने पर ही निवेश करेगा वह विभिन्न प्रकार की दशाओं का पर्याप्त ध्यान रखेगा जैसे-

1प कच्चे माल की आपूर्ति दशाँए-किस स्तर की है।

2प श्रम बल की प्राप्ति एवं प्रयोग दर क्या है वह भविष्य में कैसी रह सकती है ।

3प उत्पादन के वातावरण की संरचनात्मक व्यवस्था किस प्रकार की है।

4प सुरक्षाए परिवहनए संदेशवाहन की दशाँए किस अवस्था की है।

5प राजनीतिक सुरक्षा व्यवस्था की प्रकृति स्थायी है या परिवर्तनशील।

6प उत्पादन नियमों कानूनों पर गहन विचार विमर्श

7प कार्यवाही योजना की प्रकृति के साथ भविष्य की आशा

8प टेªडमार्कए पेटेन्ट आदि का पंजीकरण एवं प्रयोग की दशाँए।

Global Journal of Multidisciplinary Studies

Volume 8, Issue 4, March 2019

ISSN:- 2348-0459 Available online at www.gjms.edwin.co.in

9ए आपूर्ति सम्बन्धी प्रक्रिया प्राणाली नीति।

10ए समस्यात्मक कार्यवाही की निवारण प्रक्रिया।

निष्कर्ष एवं सुझाव:-

भारत सरकार द्वारा स्थापित मेक-इन-इण्डिया प्रोग्राम देश के लिए किसी क्रान्तिकारी परिवर्तनशील विचार से कम नहीं है इसके माध्यम से भारत सरकार की सबसे बड़ी सोच नवाचार को बढ़ाकर देश में उद्यमशीलता को उस स्तर पर ले जाना है जहां पर रोजगार मेकर बनकर देश एवं विभिन्न देशो के कुशल व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करना है तथा साथ में बाहरी देशों के आयातों को कम करके उनकी टेक्नोलाॅजी को देश में प्राप्त करके वैश्विक स्तर के माल का निर्माण करना देश का लक्ष्य है। वर्तमान समय में मेक-इन-इण्डिया प्रोग्राम से निर्मित विभिन्न सामानों की मांग विभिन्न देश में हो रही है। उत्तर-प्रदेश के अमेठी जिले में सेना के प्रयोग हेतु असाल्ट 203 राइफल तथा भारतीय कम्पनी द्वारा निर्मित जूतेए बुलट प्रूफ जैकेट की मांग बढ़ रही है इस योजना को सरकारी एवं निवेशकतंत्र ठीक से मिलकर संचालित करे तो यह योजना भारत वर्ष के आर्थिक विकासए उद्यमशीलताए वस्तु उत्पादन एवं रोजगार के लिए मील का पत्थर साबित होगी। वर्तमान समय में कोई भी योजना विभिन्न प्रकार की समस्या का सामना करती है परन्तु सुधार कार्यक्रम को अपना कर यह योजना एक दिन भारत की शक्ति का लोहा विश्व में मनवाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

संदर्भ:- 1ए मेक-इन-इण्डिया प्रोग्राम लिंक्स।

2ए लाइव परियोजना विशेषाक 2018।

3ए सरकारी नीतिया।

4ए ्््एपदकपंण्हवअण्पद

, , , , , ,